



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
दीनक जागरूक

दिनांक 15.8.2020 पृष्ठ संख्या.....4 कॉलम.....4-8

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद

जागरण संवाददाता, हिसार :
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूखम जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का सोमवार को डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा ने निरीक्षण किया। उन्होंने कहा कि यूरिया, डीएपी तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करती है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। इसलिए किसान अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करें।

लैब विशेषज्ञों ने बताया कि एफपीओ हैबिटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस



हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा। साथ में वीसी प्रो. समर सिंह। ● डीआइपीआरओ

खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बंदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है। जिले के अनेक किसान इस खाद

का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं। साथ ही अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद को अपनाकर न केवल

कुछ वर्षों में जीवाणु खाद के उत्पादन में हुई है वृद्धि पिछले 2 वर्षों में इस केंद्र ने लगभग 6 लाख लीटर जीवाणु खाद का उत्पादन व बिक्री की है और इस वर्ष यह लक्ष्य 10 लाख लीटर तक पहुंचाना है। अभी हाल के दिनों में जीवाणु खाद की बिक्री के लिए हमारे विश्वविद्यालय, हैफेड तथा हैबिटेट जिनमें ने करार साझन किया है, ताकि जीवाणु खाद अधिक से अधिक किसानों को उपलब्ध कराई जा सके।

विज्ञानियों से संपर्क बनाएं
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय निरंतर किसानों के हितों को व्यान में रखकर ही शोध कार्य कर रहा है। ऐजूटा समय में खराब हुई कपास की फसल को लेकर भी विश्वविद्यालय के विज्ञानियों ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर इसके कारणों को जाना है। उन्होंने कहा कि किसान विश्वविद्यालय के विज्ञानियों से लगातार संपर्क बनाए रखें और अपनी फसलों में सिफारिश किए गए कीटनाशकों का ही प्रयोग करें।

में वृद्धि कर सकते हैं। डिप्टी स्पीकर ने पादव जैव प्रौद्योगिकी केंद्र का भी दौरा किया। इस दौरान वीसी प्रो. समर सिंह, पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज आदि पदाधिकारी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब कृसरी.....

दिनांक ।।५।।७।।२०२० पृष्ठ संख्या.....३.....कॉलम.....३-४.....

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद, अधिक से अधिक किसान करें इस्टेमाल डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने किया हकूमि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

हिसार, 14 सितम्बर (ब्यूरो): यूरिया, डी.ए.पी. तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में उपचार शक्ति भी बढ़ रही है। इससे अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्टेमाल करना चाहिए। यह बात डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने सोमवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र को निरीक्षण करते हुए कही।

फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी (सेंटर ऑफ बायो-फर्टिलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहाँ चल रही गतिविधियों की जानकारी



एच.ए.यू. में जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा।

लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे लाभ के बारे

में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफ.पी.ओ. हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहाँ तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपए के खर्च के बदले केवल 150 रुपए की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बी.आर. कैबोज,

अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहरावत, कृषि उपनिदेशक डॉ. बलवंत सहारण, एडवोकेट सुभाष कुम्हा, मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. राजबीर सिंह, सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेश गेरा, डॉ. बलजीत सहारण, डॉ. राकेश कुमार, डॉ. पुष्णा खरब, हैबीटेट जिनोम इंश्वरमैट प्राइमरी प्रोड्यूसर कंपनी लिमिटेड के अध्यक्ष सतीश सहरावत, डॉ. सुभाष काजला, जगदीश प्रसाद सहित विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

ट्रॉन के मार्कट

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक ।५। ९। २०२० पृष्ठ संख्या । २ कॉलम । ६-८

यूरिया पर ₹500 खर्च की बजाय केवल ₹150 की जीवाणु खाद अधिक कारगर

गंगवा ने जीवाणु खाद प्लांट का किया दौरा, डॉ बलजीत ने दी जानकारी

भास्कर न्यूज़ | हिसार



हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी और कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए। डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने यह बात सोमवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही।

इस दौरान प्रभारी डॉ. बलजीत सहारण ने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते

जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा।

हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है। जिला के अनेक किसान इस खाद का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं और अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं। डिप्टी स्पीकर ने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को रोगमुक्त कपास की खेती के लिए अधिक शोध करना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल धीरे-धीरे बढ़ाकर डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कमी कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

उजाला

दिनांक ।५। १। २०२० पृष्ठ संख्या ।५। कॉलम ।६-८।

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद, इसका अधिक इस्तेमाल करें : गंगवा

अमर उजाला ब्यूरो

विधानसभा उपाध्यक्ष ने किया हृवि के
जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

हिसार। हरियाणा विधानसभा के उपाध्यक्ष रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी और कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए। उन्होंने ने यह बात सोमवार को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही। इस दौरान रतिया के पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतबीर सिंह वर्मा भी मौजूद थे।

उपाध्यक्ष ने बायो-फर्टिलाइजर लैब का निरीक्षण कर यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु

खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है।

गंगवा ने विश्वविद्यालय स्थित पादव जैव प्रौद्योगिकी केंद्र का भी दौरा किया और वैज्ञानिकों से वहां उपयोग की जाने वाली तकनीकों के बारे में जानकारी हासिल की।

इस अवसर पर पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतबीर सिंह वर्मा, एडवोकेट सुभाष कुंडू, सरपंच लीलूराम, सरपंच राकेश गांधी, सरपंच सतपाल सिंह, सरपंच संदीप कुमार, सरपंच बिनोद मान, मंडल अध्यक्ष बलजीत फौगाट, राजकीय महाविद्यालय हिसार के प्रोफेसर डॉ. निहाल सिंह चाहर, डॉ. विवेक सैनी, मीडिया प्रभारी डॉ. सुखबीर सिंह दूहन, एनएसएस प्रभारी डॉ. अशोक श्योराण, डॉ. राजेंद्र सेवदा, डॉ. मनोज कुमार, प्रो राजकुमार, प्रो. रमेश आर्य, डॉ. पूनम सांगवान, नरेंद्र, अजय, रमेश आर्य, सुशील वर्मा आदि उपस्थित थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

पंजाब के सरी १५ अगस्त

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक १५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या कॉलम

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद, अधिक से अधिक किसान करें इस्तेमाल : गंगवा

डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा ने किया हकूमि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

हिसार, 14 सितम्बर (राज पराशर): हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी तथा कॉफेनशन कों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए।

डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा ने यह बात आज हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृद्घ जीव वैज्ञानिक विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ वायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टैक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही। इस दैरान सतीया के पूर्व विद्यायक रामचंद्र कंवोज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. समर सिंह, हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतीया सिंह वर्मा भी मौजूद थे। डिप्टी



हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में पादव जैव प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर गंगवा। (छाया : राज पराशर)

स्पीकर ने बायो-फर्टिलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को भित्ति रहे लाभ के बारे में बित्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसानों की अनुकूल है और यह जिला का

सौभाग्य है कि यहां कृषि विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को रोगमुक्त कपास की खेती के लिए अधिक शोध करना चाहिए।

उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति प्रौ. समर सिंह से आल्यान किया कि वे मौजूदा समय में किसान की खराब हुई फसल को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय में शोध कार्यों पर बढ़ावा दें।

हकूमि के कुलपति प्रौ. समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय निरंतर किसानों के हितों को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य कर रहा है। मौजूदा समय में खराब हुई नरमा कपास की फसल को लेकर भी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर इसके कारणों को जाना है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. बीआर कंबोज, एडवोकेट सुभाष कुंड सहित विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारी व कर्मचारी मौजूद थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....ज्ञानभूमि.....

दिनांक 15.9.2020 पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण: गंगवा



हिसार/14 सितंबर/रिपोर्ट
विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी तथा कौटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदनी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए। उन्होंने यह बात आज हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूक्ष्म जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फर्टिलाइजर प्रोडक्शन एवं टैक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही। इस दौरान रतिया के पूर्व विधायक रामचंद्र कंबोज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह, हरियाणा पिछड़ा वर्ग आयोग के पूर्व चेयरमैन सतपीर सिंह वर्मा भी मौजूद थे। डिप्टी स्पीकर ने बायो फर्टिलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली।

लैब विशेषज्ञों ने बताया कि एफपीओ हैबीटेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारगर साबित हो रही है। जिला के अनेक किसान इस खाद का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं और अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं। डिप्टी स्पीकर ने कहा कि हिसार की कृषि भूमि कपास की खेती के अनुकूल है और यह जिला का सौभाग्य है कि यहां कृषि विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को रोगमुक्त कपास की खेती के लिए अधिक शोध करना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल धेरे-धेरे बढ़ाकर डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कमी कर सकते हैं। जीवाणु खाद का

इस्तेमाल करके यूरिया की कमी को पूरा किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद को अपनाकर न केवल 5 से 10 प्रतिशत फसल की पैदावार में बढ़ातीरी कर सकते हैं, बल्कि जीवाणु खाद के उपयोग से 15-25 प्रतिशत तक रासायनिक खादों के उपयोग में बचत तथा मिट्टी की पैदावार क्षमता में वृद्धि कर सकते हैं। इसके उपरांत डिप्टी स्पीकर ने विश्वविद्यालय स्थित पादव जैव प्रौद्योगिकी केंद्र का भी दौरा किया और वैज्ञानिकों से वहां उपयोग की जाने वाली तकनीकों के बारे में जानकारी हासिल की। उन्होंने कुलपति प्रो. समर सिंह से आह्वान किया कि वे मौजूदा समय में किसान की खराब हुई फसल को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय में शोध कार्यों पर बढ़ावा दें। प्राकृतिक आपदा व अन्य कारणों से किसान की फसल पूरी तरह तबाह हो जाती है, जिससे किसान की आर्थिक स्थिति पर विपरीत असर पड़ता है। इसलिए ऐसी किसी व तकनीकों को बढ़ाएं ताकि किसानों का भला हो सके।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..

मित्र गोप्ता २०२४

दिनांक १५-९-२०२० पृष्ठ संख्या कॉलम.....

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद
अधिक से अधिक किसान करें इस्तेमाल : गंगवा

डिप्टी स्पीकर रणबीर
सिंह गंगवा ने किया
हकूमि के जीवाणु खाद
प्लांट का निरीक्षण

नित्य शक्ति टाइम्स न्यूज़

हिंटी स्पीकर रणवीर सिंह गंगवाल ने यह बात आज हरियाणा कृषि विभागिकालय के सुमंजस जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो-फार्मिलाजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) आयोग के पूर्व चेयरमैन मतभीर सिंह वर्मा भी पूर्वजूद थे।

हिंटी स्पीकर ने बायो-फार्मिलाजर परिषद का निरीक्षण करते हुए पहांच चल रही गतिविधियों की जानकारी स्वी. लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपये के खर्च के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारार साधित



हो रहा है। जिला के अनेक किसान इस खद्द का उपयोग अपने खेत में कर रहे हैं और अपने खर्च को कम करते हुए जमीन की उपजाऊ शक्ति को बढ़ा रहे हैं। समर सिंह से आवाहन किया कि वे भौजटा समय में किसान की खराए हुई फसल को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय में शोध कार्यों पर बधाया दें।

यह रहे मौजूद

कृषि भूमि कपास का खेतों के अनुकूल है और यह लगानी का सामान्य है कि यहाँ विश्वविद्यालय है। उड़ोनें कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को रोपामुख कपास की खेतों के लिए अधिक रोध करना चाहिए। उड़ोनें कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल धीरे-धीरे बढ़ाकर डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कमी कर सकते हैं। जीवाणु खाद का इस्तेमाल करके यूरिया की कमी को पूरा किया जा सकता है। इसके उपरांत फटो स्प्रीकर ने विश्वविद्यालय स्थित पाठ्य जैव प्रौद्योगिकी केंद्र की भी दीरा किया और वैज्ञानिकों से वह उपयोगी की जाने वाली तकनीकों के बारे में जानकारी हासिल की। उड़ोनें विश्वविद्यालय के कलपत्रि श्री-



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम...

दिनांक १५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या । कॉलम ।

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने किया हकूमि के जीवाणु खाद प्लाट का निराकरण खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद, अधिक से अधिक किसान करें इस्तेमाल : गंगवा

1000 例

हिस्सा। हाँ यहाँ विवाहकार्य के द्वितीय स्थैतिक एवं द्वितीय स्थैतिक ने कहा कि यूरोप, द्वितीय लम्बा अधिकारी द्वारा विवाह के लिये जीवन लाभ

जीवाणु खाद में जीवों को उपचारित किया जाता है। इसके अन्तर्गत कई क्रियान्वयन प्रक्रियाएँ की दौरान यांत्री के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। जीवाणु खाद पर होने वाले 500 रूपये के छुट्टे के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद
उपचारित करने की विधि का अनुभव



खाद के अन्यकारन न करता है 5 से 10 प्रतिशत फसल जीव फैलावाएँ में बहुतीय तरफ सहज हैं, जबकि जीवाणु खाद के उत्पादन में 15-25 प्रतिशत तरफ रासायनिक खादों के उत्पादन में बहुत लगभग जीवाणु वाली फसल में खाद कर सकते हैं। इनके उपरांत हिन्दी शब्दों के निवारणीकरण विधि विकास के दृष्टिकोण से अत्यधिक जरूरी है।

प्रकाशनी पूर्ण रूप से अधिकार किया जिसे वे
मानवानुभव समय में किसान की व्यापार और परस्पर की
व्यापार तथा विवरणों में लोग करते हों पर
व्यापार है। प्राचीन भाषाएँ वा अन्य भाषाएँ
किसान की व्यापार पूर्ण तरह बदल दी जाती है, किससे
किसान की अधिक विविधता पर विविधता असर पड़ती
है। इसका अर्थ यह है कि वास्तविकता की व्यापार तक
किसानों की व्यापार हो सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

ज्ञान आड़ी

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक १५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या कॉलम

खेत में जीवाणु खाद का अधिक इस्तेमाल करें किसानः गंगवा डिप्टी स्पीकर ने किया हक्कि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

जगभार्ग न्यूज़

हिसार। हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा है कि यूरिया, डीएपी तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेतों की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदारी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए।

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूच्यम जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उपादाक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेटर ऑफ वायो फार्टीलाइजर प्रोडवशन एवं ट्रेनिंग) का निरीक्षण कर रहे थे। इस दौरान रतिया के पूर्व विधायक रामचंद्र कबोज व हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर मिह भी मौजूद थे। डिप्टी स्पीकर ने वायो-फार्टीलाइजर लैब का निरीक्षण



जीवाणु खाद उपादाक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा।

करते हुए यहां चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब में किसानों को मिल रहे लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एकप्रीओ हैबीटेट के माथे हुए समझौते के अंतर्गत यहां तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद में व्याजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दौरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरिया खाद पर होने वाले 500 रुपए के खर्च के बदले केवल

डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कट सकते हैं कमी

उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल धीरे-धीरे बढ़ाकर डीएपी व यूरिया खाद की खपत में कमी कर सकते हैं। जीवाणु खाद का इस्तेमाल करके यूरिया की कमी को पूरा किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि हक्कि के वैज्ञानिकों द्वारा किसानों की फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए हर सभव प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय की ओर से नई-नई तकनीकों व किसी को विकसित किया जा रहा है। इसी कड़ी में फसलों के लिए वैज्ञानिकों द्वारा तैयार जीवाणु खाद को तैयार किया जाना महत्वपूर्ण कदम है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

सिटी पर्स

दिनांक १५.९.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में निभा रही है महत्वपूर्ण भूमिका: गंगवा

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने किया हक्की के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

सिटी पर्स न्यूज, हिसार। हरियाणा विश्वविद्यालय के डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीएपी तथा कीटनाशकों के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद खेती की लागत को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों को आमदानी और जमीन की उपजाऊ शक्ति भी बढ़ रही है। अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का उत्पादन करना चाहिए। गंगवा ने यह बात आज हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूख्य जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र (सेंटर ऑफ बायो फार्मिलाइजर और प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) का निरीक्षण करते हुए कही।

डिप्टी स्पीकर ने बायो-फार्मिलाइजर लैब का निरीक्षण करते



हिसार। हक्की में जीवाणु खाद उत्पादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र का निरीक्षण करते डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा।

हुए यहां चल रही गतिविधियों की तैयारी किए जा रहे जीवाणु खाद से जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफपीओ हेल्पेट के साथ हुए समझौते के अंतर्गत यहां

तैयार किए जा रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। हक्की के कुलपैंच प्लॉटों में समर मिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय निरंतर किसानों के हितों को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य कर रहा है। गौड़ा

समय में खरब हुई नरम कपास की फसल को लेकर भी विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने प्रौद्योगिकी के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर इसके करणों को जाना है। उन्होंने कहा कि किसान विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से

लगातार संपर्क बनाए रखें और अपनी फसलों में विफारिश किए गए कीटनाशकों का ही प्रयोग करें। विना सिफारिश किए गए कीटनाशकों के प्रयोग से कई बार किसान की फसल नष्ट हो जाती है और उन्हें आधिक नुकसान झेलना पड़ता है।

इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. वी. आर. कंठोज, अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. महरवत, कृषि उपनिदेशक डॉ. बलवंत महारण, एडवोकेट सुभाष कुमार, भौतिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिकारी डॉ. राजबीर सिंह, सूम जीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. योगेश गेया, डॉ. बलजीत महारण, डॉ. योगेश कुमार, डॉ. पुष्पा खरब सहित विश्वविद्यालय के अनेक अधिकारी व कर्मचारी भी जूद थे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.

→ 192112 25

दिनांक १५.९.२०२० पृष्ठ संख्या कॉलम

खेती की लागत को कम कर रही जीवाणु खाद, अधिक से अधिक किसान करें इस्तेमाल : गंगवा

डिप्टी स्पीकर रणबीर सिंह गंगवा ने किया हक्कुवि के जीवाणु खाद प्लांट का निरीक्षण

हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर रणजीत सिंह गंगवा ने कहा कि यूरिया, डीपीपी तथा कोटिनारायको के विकल्प के रूप में जीवाणु खाद्य खेतों की लागतों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इससे किसानों की आमदानी और जपीन की उपजाऊ शर्कित भी बढ़ रही है; अधिक से अधिक किसानों को जीवाणु खाद का इस्तेमाल करना चाहिए।

हिन्दी स्पीकर रणवीर सिंह गंगवा ने यह बात आज हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सूमन जीव विज्ञान विभाग के जीवाणु खाद उत्पादक पृष्ठ प्रोफेसरिकों के कूट (सेंटर औपर वाया फर्मलिनेजर प्रोडक्शन एवं टेक्नोलॉजी) की निरीक्षण करते हुए कही। इस दौरान रंगता के पूर्व विश्वायक रामचंद्र कंबाज, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कलापाति प्रो. समर सिंह, हरियाणा प्रिंसिपल वर्ष अध्योग के पूर्व चेयरमैन मन्त्रीवार सिंह वर्षा भी मौजूद थे। हिन्दी स्पीकर ने आगो-फर्टीलाइजर लैब का निरीक्षण करते हुए यहाँ चल रही गतिविधियों की जानकारी ली। लैब विशेषज्ञों ने इस लैब से किसानों को मिल रहे नाभक के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि एफसीआई बीटेट के साथ हुए समझाते हैं अंतर्गत यहाँ की विद्रोही जां रहे जीवाणु खाद से बीजों को उपचारित किया जाता है। इसके अलावा कई किसान फसलों की सिंचाई के दीरान पानी के साथ भी इस खाद का उपयोग करते हैं। यूरोप खाद पर भेज वाले 500 रुपये के खंड के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक करागर साक्षित हो रही है। जिला के अनेक किसान इस खाद का उपयोग अपने उत्पाद में कर रहे हैं और अपने खंड को कम करते हुए जमीन की उपजक शक्ति को बढ़ा रहे हैं। हिन्दी स्पीकर ने कहा कि किसार की कृषि भूमिका क्यास की खेतों के अनुकूल है और यह जिला का सीधार्य है कि यहाँ कृषि विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को योग्यमुक्त क्यास की खेतों के लिए अधिक शोध करना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल पौरी भूमि बढ़ावकर द्वारा एकी व यूरोप खाद की खात्त में कमी कर सकते हैं। जीवाणु खाद का इस्तेमाल करके यूरोप की कमी को पूरा किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि एकत्रित के

A black and white photograph showing a group of approximately ten men in a formal setting. They are seated around a long, dark wooden conference table. The men are dressed in various styles of clothing, including suits and traditional attire. Some are wearing glasses. The room has large windows in the background, and the overall atmosphere appears to be a professional or political gathering.

सिंचाई के दीरान पानी के साथ भी इस खाद का उत्पादन करते हैं। योग्य खाद पर जैव वाटे 500 रुपये के खंड के बदले केवल 150 रुपये की जीवाणु खाद अधिक कारगर साधित हो रही है। जिला के किसान खाद पर जैव उत्पादन अपने खेत में कर रहे हैं और अपने खंड को कम करते हुए जिला की उत्तमता शाहित को बढ़ा रहे हैं। इट्टी स्मीकर ने कहा कि किसार की कृषि भूमि काषाय की खेती के अनुकूल है और यह जिला का सीधार्य है कि यहाँ कृषि विश्वविद्यालय है। उन्होंने कहा कि कृषि वैज्ञानिकों को योग्यकृत काषाय की खेती के लिए अधिक शोध करना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसान जीवाणु खाद का इस्तेमाल भीर-भीव बढ़ाकर डीपी व यूरिया खाद की खपत में कमी कर सकते हैं। जीवाणु खाद का इस्तेमाल करके यूरिया की कमी को पूरा किया जा सकता है।

उन्होंने कहा कि एकविं के

प्रो. समर सिंह से आवायन किया कि वे भौजूदा समय में किसान की खारब हुई फसल को ध्यान में रखकर विश्वविद्यालय में शोध कार्यों पर बढ़ावा दें। प्राकृतिक अपदा व अन्य कारणों से किसान की फसल पूरी तरह तबाह हो जाती है, जिससे किसान की आर्थिक स्थिति व परिवर्त असर पड़ता है। इसलिए ऐसी किस्मों व तकनीकों को बढ़ाएं ताकि किसानों का भल न हो सके। हावीन के कुरांगी प्रो. समर सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय निरंतर किसानों के हितों को ध्यान में रखकर ही शोध कार्य कर रहा है। भौजूदा समय में खारब हुई नरसा कपास की फसल को लेकर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों का दौरा कर दिये कारणों को जाना है। उन्होंने फसलोंकी गतिशीलता, गारीजौरीका प्रबल मूल्य है। इसके लिए वर्ष 1986 में तमारे विभाग को राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद, नई दिल्ली की ओर से राष्ट्रीय उत्पादकता पुस्तकार से सम्मानित किया गया। इस केंद्र का मुख्य उद्देश्य किसानों को जहर मुक्त खेतों के लिए प्रतीक करना, किसानों के जीवाणु खाद के प्रति जागरूक, प्रशिक्षित एवं उपयोग करना, जीवाणु खाद का उत्पादन व न्यूनतम मूल्य पर वितरित करना है। जायोफटिलाइजर्स के दैनिक उत्पादन को बढ़ाने के लिए केंद्र ने प्रति 200 लीटर की क्षमता के तीन फर्मेंटर को स्थापित किया है। इसके अलावा जीवाणु खाद के बॉटलिंग के लिए एक बड़ा उत्पादक भरने और सेल करने की मशीन को भी सेटअप किया गया है।

इसके कारणों ना जाना हो। उत्तरान काट के विस्तार विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों से लगातार संपर्क बनाया रखें। और अपनी फसलों में सिस्टमिरिश किए गए कीटनाशकों का ही प्रयोग करें। बिना सिस्टमिरिश किए गए कीटनाशकों के प्रयोग से कई बार फिल्मान की फसल नष्ट हो जाती है और उन्हें अधिक नुकसान ड्लेना पड़ता है। सूखे जीव विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. राजेश योशी ने बताया कि सूखे जीव विज्ञान विभाग का जीवाणु खाद उत्तरादक एवं प्रौद्योगिकी केंद्र विकल्प 20 वर्षों से जीवाणु खाद का उत्पादन व विक्री कर रहा है। हमारा विभाग मुख्यतः सभी फसलों के लिए जीवाणु खाद हैं। यह जीवाणु खाद का उत्पादन विक्री कर रहा है। जैसे कि एग्जाटिका,



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

२०१८ का जारी

दिनांक ।।५।। ७।। २०२० पृष्ठ संख्या ।।५।। कॉलम ।।२-६।।

वेबिनार

महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय में मशरूम विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण का समाप्त

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रो. समर

जागरण संवाददाता, हिसार : बागवानी में विविधकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है, जो कम धन से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। यहाँ बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कही।



हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह। ● जागरण आर्काइव

वह महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के क्षेत्रीय खुंभ अनुसंधान केंद्र मुथल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय आनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समाप्त अवसर पर प्रतिभागियों को बतार मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे।

यह प्रशिक्षण शिविर खुंभ उत्पादन,

देशभर से ८७ प्रतिभागी हुए शामिल

एमएचयू के अनुसंधान निदेशक डा. रमेश गोयल ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में देशभर से ८७ प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। इनमें पंजाब, हरियाणा व पश्चिमी ऊर प्रदेश के विद्यार्थी, युवा, किसान एवं उद्यमी शामिल थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मशरूम अनुसंधान निदेशालय, सोलन के वरिष्ठ विज्ञानियों डा. वीषी शर्मा, डा. शेत कमल, डा. सुधीर, डा. अनुपम, एनआइएफटीईमए, सोनीपत के विज्ञानियों डा. अनुराग, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के उपनिदेशक डा. सुरेंद्र सिंह व पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के विज्ञानी डा. शिवानी ने मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया। इसके अलावा प्रतिभागियों को मशरूम उद्योग, उसके उत्पादन, नई तकनीक, नई प्रजातियों, मशरूम फार्म डिजाइन आदि के बारे में बेहतरीन ढंग से जानकारी मुहैया करवाई गई।

मशरूम को बनाएं टेबल फूड

समर सिंह ने कहा कि मशरूम खाने में रवांदिट होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद है। इसलिए मीजूदा समय में मशरूम को एक टेबल फूड बनाने की जरूरत है, ताकि घर-घर तक इसका उपयोग हो सके। उन्होंने कहा कि हमारे देश में अभी इसका उपयोग प्रति व्यक्ति बहुत कम है, जबकि नीदरलैंड व चीन में इसका उपयोग बहुत ज्यादा है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे वर्तमान समय में विकसित नई प्रजातियों की जानकारी हासिल कर इस क्षेत्र में व्यवसाय स्थापित करें।

प्रोसेसिंग व विपणन को लेकर लाभ उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी विज्ञानियों से प्राप्त करें। साथ ही मशरूम के उत्पादन, करें। महाराणा प्रताप बागवानी के प्रतिभागियों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पर बधाई दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

पंजाब के सारे

दिनांक 15. 9. 2020. पृष्ठ संख्या..... 2 कॉलम..... 6.8

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रो. समर सिंह

■ 3 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण सम्पन्न

हिसार, 14 सितम्बर (ब्यूरो) : बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व एम.एच.यू., करनाल के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे एम.एच.यू., करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केन्द्र मुरथल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित 3 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर



प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों को संबोधित करते वक्ता।

के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को बतौर मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण खुम्ब उत्पादन, प्रोसेसिंग व विपणन को लेकर आयोजित किया गया। प्रो.

समर सिंह ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अधिक से अधिक लाभ उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी वैज्ञानिकों से प्राप्त करें।

मशरूम को टेबल फूड बनाने की जरूरत

प्रो. समर सिंह ने कहा कि मशरूम खाने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ पोषण से भरपूर है। इसलिए मौजूदा समय में मशरूम को एक टेबल फूड बनाने की जरूरत है, ताकि घर-घर तक इसका उपयोग हो सके। इसके अनेक प्रकार के व्यंजन व इसको परीक्षित भी किया जा सकता है। हमारे देश में अभी इसका उपयोग प्रति व्यक्ति बहुत ही कम है, जबकि नीदरलैंड व चीन में इसका उपयोग बहुत ज्यादा है।

फसल अवशेष का करें उचित प्रबंधन

एम.एच.यू. के विस्तार शिक्षा निदेशक डा. विजय अरोड़ा ने फसल अवशेष का उचित प्रबंध करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। पराली की न जलाकर इसका उपयोग मशरूम के लिए कम्पोस्ट बनाने में किया जा सकता है। इससे वातावरण दूषित नहीं होगा, मिट्टी की उर्वा शक्ति बढ़ेगी, उसमें सूक्ष्म जीव नष्ट नहीं होंगे। पराली न जलाने के लिए इसे एक सामाजिक अभियान के रूप में ग्रामीण केंद्र से जुड़े सभी वर्गों को इसमें योगदान देना होगा।

देशभर से 87 प्रतिभागी हुए शामिल

एम.एच.यू. के अनुसंधान निदेशक डा. रमेश गोयल ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में देशभर से 87 प्रतिभागियों ने हस्ता लिया, जिनमें पंजाब, हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश के विद्यार्थी, युवा, किसान एवं उद्यमी शामिल थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मशरूम अनुसंधान निदेशालय, सोलन के वरिष्ठ वैज्ञानिकों डॉ. वी.पी. शर्मा, डॉ. श्वेत कमल, डॉ. सुधीर, डॉ. अनुपम, एन.आई.एफ.टी.ई.एम.ए., सोनीपत के वैज्ञानिक डॉ. अनुराग, राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड के उपनिदेशक डॉ. सुरेंद्र सिंह व पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के वैज्ञानिक डॉ. शिवानी ने मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों का अवगत करवाया व विस्तार पूर्वक जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
दीन के भास्कर

दिनांक । ५। । १। । २०२०। पृष्ठ संख्या..... २ कॉलम..... ६। ४

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रो. समर

भास्कर न्यूज़। हिसार

मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है, जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि

विश्वविद्यालय हिसार व एमएचयू करनाल के कूलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केन्द्र मुरथल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन पर

प्रतिभागियों को बतार मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण खुम्ब उत्पादन, प्रोसेसिंग व विपणन को लेकर आयोजित किया गया। प्रो. समर सिंह ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अपनी समस्याओं का समाधान वैज्ञानिकों से प्राप्त करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....जनभूमि.....
 दिनांक १५-९-२०२० पृष्ठ संख्या.....४..... कॉलम.....७-८.....

'कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम'

हिसार। बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम लागत में शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व एमएचयू करनाल के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कही। वे एमएचयू करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केंद्र मुरथल की ओर से आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समाप्त अवसर पर प्रतिभागियों को बताए मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मशरूम के उत्पादन, विपणन व भंडारण बारे में भी अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपना स्वरोजगार स्थापित करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक १५.९.२०२० पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रोफेसर समर सिंह

मशरूम विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण सम्पन्न

टुडे न्यूज़ | हिसार

जगतानी में विविधकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को बढ़ावा भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व एमएचयू करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान कन्द्र मुरथल की ओर से गढ़ीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को बौती मुख्यालिखित औनलाइन संबोधित कर रहे थे। प्रशिक्षण खुम्ब उत्पादन, प्रोसेसिंग व विपणन को लेकर आयोजित किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अधिक से अधिक लाप उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी वैज्ञानिकों से प्राप्त करें। साथ ही मशरूम के उत्पादन, विपणन व खंडालन बारे में भी अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपना स्वरोजगार स्थापित करें। एमएचयू के कुलपति वा स्वामित किया और प्रशिक्षण के प्रतिभागियों को सफलतापूर्वक प्रशिक्षण हासिल करने

मशरूम को टेबल फूड बनाने की जरूरत



प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों को संबोधित करते देता।

फसल अवशेष का करें

उत्तित प्रबंधन

एमएचयू के विद्यार्थी शिक्षा विदेशीक डा. विजय अरोड़ा ने फसल अवशेष का उत्तित प्रबंध करने वाली आवश्यकता पर विशेष ध्यान दिया। पराली को व जलाकर इसका उपयोग मशरूम के लिए काम्पोट बनाने में उपयोग किया जा सकता है। इससे वातावरण दृष्टि नहीं होगा, भिन्नी यी उर्वरा शुद्धित बढ़ेगी, भिन्नी में सूक्ष्म जीवी बट्ट वही होगी। पराली व जलाने के लिए इसे पक समाजिक अभियान के रूप में याजीन क्षेत्र से जुड़े सभी टर्गों को इसमें योगदान देना होगा।

देशभर से 87 प्रतिभागी हुए शामिल

एमएचयू के अनुसंधान विदेशीक डा. रमेश गोयल ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में देशभर से 87 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें पंजाब, हरियाणा व पर्यायी उत्तर प्रदेश के विद्यार्थी, युवा, छिंसान एवं उद्यमी शामिल थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के मशरूम अनुसंधान विदेशीक, सोलन के विश्वविद्यालय, सोलन के विश्वविद्यालय, राजस्थानी योर्ड के उपरिवेशीक डॉ. सुरेन्द्र सिंह व पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के वैज्ञानिक डॉ. ए. गवी ने मशरूम ते जुड़े विभिन्न विद्यार्थी पर आपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों वे अवगत करवाया व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इस ने अलावा प्रतिभागियों द्वारा मशरूम उपयोग, उसके तकनीक, नई प्रजातियों, मशरूम फार्म डिजाइन आदि के बारे में बोहतलीन ढंग से जा जानकारी सुनिया करवाई। साथ ही प्रशिक्षण में वैज्ञानिकों वे प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.

पाठ्य वर्तो

दिनांक १५-९-२०२० पृष्ठ संख्या कॉलम

हकृवि में मशरूम विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण सम्पन्न
कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूमः प्रो. समर सिंह

ਪੰਜਾਬ ਬਾਬੇ ਵਿਦਿਆ



में भी अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अनेक स्वरोत्तमा स्थापित करें। प्रशंसन्युक्त के कृतसंचय डा. अजय सिंह ने कुलपति का स्वतंत्र किया और प्रशिक्षण के प्रतिभावितों को स्थानान्वेषक प्रशिक्षण हासिल करने पर बधाई दी।
मध्यसंस्कृत को टेबल फूड बनाने की जहरत प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि मध्यसंस्कृत खाने में स्वाधित्य होने के साथ-साथ सेहत लिए भी बहुत फायदेमंद है वह वोषण से भी है। इसलिए जौजूटा समय में मध्यसंस्कृत को टेबल फूड बनाना की जहरत है, ताकि रात तक उत्पायन हो सके। इनके अनेक प्रकर के व्यंजन व इसको पर्याप्त भी किया जा सकता है। हांगन देश में इसका उत्पायन प्रति वर्षीय बहुत ही कम

जनकिनी द्वारा लैंड व चीन में इसका उत्पोदन
बहुत ज्यादा है। उठोने प्रतिभागियों से
आहवान किया कि वे वर्तमान समय में
विकासित नई प्रणालियों की जानकारी हासिल
कर इस क्षेत्र में व्यापार्य स्थापित करें।

फसल अवश्य का करें उचित प्रबंधन
एमप्यू के विस्तार सिंचन नियंत्रक डा.
विजय अग्रही ने फसल अवश्य का उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता पर विशेष वक्त
पालाई को न जलाकर इसका उपयोग मध्यरूप के लिए कम्पोस्ट बनाने में उपयोग किया जा सकता है। इससे बातचलण दृष्टि नहीं होगा, पिण्डी को उचित रक्षण बढ़ानी, पिण्डी में सूखे जीवी नहीं होंगे। पालाई न जलाने के लिए इसे सामाजिक अभियान के रूप में ग्रामीण लोग से जुड़े सभी वर्गों को इसमें योगदान देना होगा।

हिस्सा लिया, जिनमें पंजाब, हरियाणा के विभिन्न युवा, किसान एवं दूधमी शामिल थे। भारतीय कृषि अनुसंधान केंद्र के मशहूर अनुच्छेद निर्देशनलय, सोलन के विधि वैज्ञानिक डॉ. वी.पी. रामा, डॉ. स्वतं कमल, डॉ. सुधीर, डॉ. अनुमति एजन्सीएफीमैट. सोनीपत के वैज्ञानिक डॉ. रामेश, राष्ट्रीय विद्युत बोर्ड के उपनिदेशक डॉ. सुरुद सिंह व पंजाब कृषि विद्युतियालय, लखनऊ के वैज्ञानिक डॉ. शिवकुमार ने मशहूर से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों में जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने अल्पाधिकारी व मशहूर के बाहर में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इसके अलावा प्रतिवार्षियों को मशहूर उद्योग, उत्सक उत्पादन, नई तकनीक, नई प्रतिक्रियाएँ, मशहूर फार्म डिजाइन आदि के बारे में बहेतरीन ढंग से जानकारी महसूस करतावै। साथ ही प्रशिक्षण में वैज्ञानिकों ने प्रतिवार्षियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विवादी किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..

नियम विभाग २०२४

दिनांक १५.९.२०२० पृष्ठ संख्या कॉलम

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रो. समर सिंह

मशरूम विषय पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण सम्प्रत्र

नित्य शक्ति दाइम्स न्यूज
हिसार। बांगवानी में विविधकरण के
रूप में भारतीय एक ऐसा व्यवसाय है
जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है
और सफल होने पर भारतीय उत्पादन
को किसी भी स्तर पर बढ़ावा जा सकता
है। ये विचार औरधीरे चरण सिंह
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व
एमएचयू करनाल के क्षुलपारी प्रोफेसर
समझ सिंह ने कहे।

ये एपरच्यु करनाल के बीत्रीय खुम्ब
अनुसंधान केंद्र मुख्यल की ओर से
राहीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के
तहत आयोजित तीन दिवसीय
अनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समाप्त
अवसर पर प्रतिभागियों को बताई
मुख्यातिथि अनलाइन संबोधित कर रहे
थे। प्रशिक्षण खुम्ब उत्पादन, प्रोसेसिंग व
विषयन को लेकर आयोजित किया
वैज्ञानिकों से प्राप्त कर। साथ ही मशरूम
के उत्पादन, विषयन व भौतिक वार्ता में
भी अधिक से अधिक जानकारी हासिल
कर अपना स्वरोगजार स्थापित करें।
एपरच्यु के कुलसंचिव डा. अजय सिंह
ने कुलपति का स्वागत किया और
प्रशिक्षण के प्रतिभागियों को
सफलतापूर्वक प्रशिक्षण हासिल करने
पर बधाई दी।



प्रश्न-रूप की टेबल फूड बनाने की जरूरत : प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि मरणूल खाने में स्वाधिक होने के साथ-साथ मेहत के लिए भी बहुत फायदेही है व पोषण से भरपूर है। इसलिए मौजूदा समय में मरणूल को एक टेबल फूड बनाने की जरूरत है, ताकि घर-घर तक इसका उपयोग हो सके। इसके अनेक प्रकार के व्यवस्थाएँ हमारे देश में अभी इसका उपयोग प्रति व्यक्ति बहुत ही कम है, जबकि नीदरलैंड व चीन में इसका उपयोग बहुत ज्यादा है।

फसल अवशेष का करें उचित प्रबंधन

एमारचयू के विस्तार शिक्षा निदेशक डा. विजय अरोड़ा ने फसल अवधोप का चैरिट प्रबंध करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया। पराली को न जलाकर इसका उपयोग मशक्कुम के लिए कम्पोस्ट बनाने में उपयोग किया जा सकता है। इसमें बातावरण दृष्टि नहीं होगा, पिट्ठी की ऊर्ध्वा शक्ति बढ़ेगी, पिट्ठी में सूख जीवी नहीं होंगे। पराली न जलाने के लिए इसे एक सामाजिक अधियान के रूप में ग्रामीण क्षेत्र से जड़े सभी वर्गों को इसमें योगदान देना होगा।

देशभर से 87 प्रतिभागी हुए शामिल

एप्राएच्यू के अनुसंधान निदेशक डा. रमेश गोयल ने बताया कि इस प्रशिक्षण शिविर में देशभर से 87 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया, जिनमें पंजाब, हरियाणा व पंजाबी उत्तर प्रदेश के विद्यार्थी, युवा, किसान एवं उद्यमी शामिल थे। भारतीय कृषि अनुसंधान परिवर्द्ध के मरम्मान अनुसंधान निदेशालय, सोलन के विश्व वैज्ञानिकों द्वा. वी.पी. शर्मा, डॉ. शेत काळ, डॉ. सुधीर, डॉ. अनुपम, एनआईएफटीईमए, सोनीपत के वैज्ञानिक डॉ. अनुराग, राहीय व्यावायी वौहों के उपनिदेशक डॉ. सुरेंद्र रित्ति व पंजाब कृषि विधायिकालय, लुधियाना के वैज्ञानिक डॉ. शिवायनी ने मरम्मान से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों में प्रतिभागियों को अवाहन करवाया व मरम्मान के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। इसके अलावा प्रतिभागियों को मरम्मान उद्योग, डस्टर्स एवं उत्पादन, नई तकनीक, नई प्रतिक्रियाएँ, विभिन्न विषयों पर विवेचन करने के लिये एक विशेष संस्कृतीय समिति भी बनायी गयी।

पश्चात् यम् दिग्ब्रहण आदि के बारे में व्यवहारण हो सकता है। इसका अर्थ है कि उन्होंने प्रतिभागियों से आङ्गन किया प्रजातियों की जानकारी हासिल कर इस तरीके से व्यवसाय में विकसित नहीं क्षेत्र में व्यवसाय स्थापित करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम..... नम्बर: द्यौ 2

दिनांक ।५. ९. २०२० पृष्ठ संख्या कॉलम.....

मशरूम को टेबल फूड बनाने की आवशकता: कुलपति

हिसार/14 सितंबर/रिपोर्टर

बागवानी में विविधीकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार व एमएचयू करनाल के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे एमएचयू करनाल के क्षेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केन्द्र मुरथल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर प्रतिभागियों को बतौर

मुख्यातिथि ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अधिक से अधिक लाभ उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी वैज्ञानिकों से प्राप्त करें। साथ ही मशरूम के उत्पादन, विपणन व भंडारण बारे में भी अधिक से अधिक जानकारी हासिल कर अपना स्वरोजगार स्थापित करें। प्रोफेसर सिंह ने कहा कि मशरूम खाने में स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सेहत के लिए भी बहुत फायदेमंद है व पोषण से भरपूर है। इसलिए मौजूदा समय में मशरूम को एक टेबल फूड बनाने की जरूरत है, ताकि घर-घर तक इसका उपयोग

हो सके। इसके अनेक प्रकार के व्यंजन व इसको परिरक्षित भी किया जा सकता है। हमारे देश में अभी इसका उपयोग प्रति व्यक्ति बहुत ही कम है, जबकि नीदरलैंड व चीन में इसका उपयोग बहुत ज्यादा है। उन्होंने प्रतिभागियों से आह्वान किया कि वे वर्तमान समय में विकसित नई प्रजातियों की जानकारी हासिल कर इस क्षेत्र में व्यवसाय स्थापित करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

पुनिक मासिक करनाल

दिनांक 15.9.2021 पृष्ठ संख्या..... कॉलम.....

कम लागत में अधिक मुनाफा देता है मशरूम : प्रो. समर

करनाल। बागवानी में विविधकरण के रूप में मशरूम एक ऐसा व्यवसाय है जो कम पैसे से शुरू किया जा सकता है और सफल होने पर मशरूम उत्पादन को किसी भी स्तर पर बढ़ाया जा सकता है।

यह बातें महाराणा प्रताप बागवानी विश्वविद्यालय करनाल के कूलपाति प्रोफेसर समर सिंह ने कहीं। वे विश्वविद्यालय के श्वेत्रीय खुम्ब अनुसंधान केन्द्र मुख्यल की ओर से राष्ट्रीय कृषि उत्पादन शिक्षा परियोजना के तहत आयोजित तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर के समाप्ति अवसर पर प्रतिभागियों को बतौर मुख्यालिथ ऑनलाइन संबोधित कर रहे थे। यह प्रशिक्षण शिविर खुम्ब उत्पादन, प्रोसेसिंग व विपणन को लेकर आयोजित किया गया। प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रतिभागी अधिक से अधिक लाभ उठाएं और अपनी समस्याओं का समाधान भी वैज्ञानिकों से प्राप्त करें, साथ ही मशरूम के उत्पादन, विपणन व भंडारण वारे में भी अधिक जानकारी हासिल करें अपना स्वरोजगार स्थापित करें।